दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IX (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/18(JS)–HL-**HL9**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ ✓ | नहीं |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 9 11/09/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

0	8	6	0	5	2	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): ______

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are ***EIGHT*** *questions divided in* ***TWO SECTIONS.***

Candidate has to attempt ***FIVE*** *questions in all.*

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any ***THREE*** *are to be attempted choosing at least* ***ONE*** *question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in ***HINDI*** *(Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान मे प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिंदी का प्रारंभिक स्वरूप

नाथ साहित्य सिद्ध सम्प्रदाय की परंपरा में परन्तु इससे विपरीत मान्यताओं वाले नाथ-सम्प्रदायी योगियों द्वारा अपने मत प्रवर्तन हेतु मुख्यतः रचा गया।

ऐसे तो नाथ साहित्य मुख्यतः अर्द्धमागधी अपभ्रंश में लिखा गया पर खड़ी बोली हिन्दी का विकास इसी अपभ्रंश व्यवस्था के परिष्कार से ही हुआ अतः नाथ साहित्य में भी खड़ी बोली के कुछ लक्षण दिख जाते हैं। यथा -

"नौ लखि पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन ले जोगी खेलें, तब अंतरि बसें भंडारा"

उपरोक्त पंक्तियों में अकारान्तता, ईकारान्तता की प्रवृत्ति व शब्द-योजना खड़ीबोलीहिन्दी का आभास कराती है। इसी प्रकार

"जोगी सोई जाणिए, जगते रहे उदास
तत निरंजण पाइए, कहैं मछंदर नाथ"

में 'न' की जगह 'ण' का प्रयोग खड़ीबोली हिन्दी की एक विभेदक विशेषता का एहसास कराती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

साहित्यिक प्रवृत्तियों के स्तर पर वर्ण-व्यवस्था के विरोध, आडंबरों के विरोध आदि के भाव के माध्यम से नाथ साहित्य उसी आधुनिकता के आरंभिक अंशों को धारण करता है जिसे बहुत भारतेन्दु युग के बाद खड़ी बोली हिन्दी ने किया।

परन्तु फिर भी यह मानना होगा कि यह संकेत आरंभिक ही हैं और भाषा के परिष्कार को खड़ी बोली तक पहुँचने में एक लम्बा वक्त लगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में डा. रघुवीर का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली के विकास में डा० रघुवीर 'पुनरुत्थानवादी संप्रदाय' के शीर्ष पुरुष माने जाते हैं।

डा० रघुवीर का मानना था कि संस्कृत के शब्दों को आधार मानकर शब्दावली बनाने से उस सिद्धांत से जुड़े अन्य शब्दों का निर्माण भी आसानी से हो जाता है। उदाहरणार्थ legal का अनुवाद यदि कानून करेंगे तो विधानसभा आदि के लिए अलग शब्द चाहिए परन्तु 'विधि' करने पर legal से जुड़े समस्त शब्द बनाये जा सकते हैं यथा - वैधिक, विधान, विधायी, विधायक इत्यादि

इसी प्रकार डा० रघुवीर ने सिद्ध किया कि लैटिन के अवयव जो मुख्यतः विज्ञान की भाषा में प्रयुक्त होते हैं, संस्कृत के अवयवों से मिलते जुलते हैं यथा - Parliament का 'Pari' अवयव संस्कृत के 'परि' से इस प्रकार Pariament का अनुवाद परिपुष्प

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आसानी से हो जाता है।

संस्कृत पर आधारित पारिभाषिक शब्दावली पर जोर देने के बावजूद वे शब्दों की सरलता, सारगर्भिता तथा प्रयोग की सहजता पर बल देते थे।

उन्होंने अकेले लाखों शब्दों का अनुवादकर हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली की समृद्धि में अतुलनीय योगदान दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उ ऐसे तो भाषा एक समाज-वैज्ञानिक संरचना है और भाषा के विभिन्न स्तरों के बीच सूक्ष्म अंतर कर पाना अत्यन्त जटिल एवं कृत्रिमासी कार्य है परन्तु फिर भी भाषावैज्ञानिक अध्ययन की सहजता के लिए राष्ट्रभाषा व राज-भाषा में निम्नांकित अंतर किये जा सकते हैं।

(1) राष्ट्रभाषा किसी राष्ट्र में सर्वाधिक व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त आम जनजीवन को धारण करने वाली भाषा है जबकि राजभाषा शासकीय कार्यों में अधिकारी व कर्मचारी वर्ग द्वारा प्रयुक्त भाषा को कहा जाता है।

(2) राष्ट्रभाषा की शब्दावली मुख्यतः गैरपारिभा-षिक, आत्मनिष्ठ होती है जबकि राजभाषा की शब्दावली वस्तुनिष्ठ, पारिभाषिक होती है जहाँ प्रत्येक शब्द किसी निश्चित अर्थ को वहन करता है।

(3) राजभाषा कोई विदेशी बोली या भाषा भी हो सकती है जो राजनीतिक कारणों से प्रभुत्व में आ गई हो यथा - अँग्रेजी जबकि राष्ट्रभाषा कोई जनबोली ही हो सकती है। यह जरूर हो सकता है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बहुत लम्बे प्रयोग के पश्चात राज्यभाषा ही सहज रूप से राष्ट्रभाषा का स्थान ग्रहण कर ले।

(4) राष्ट्रभाषा में ही राष्ट्र की संस्कृति, आम जन-जीवन का निर्वाह संभव है राज्यभाषा में नहीं।

(5) एक अन्य स्तर पर राज्यभाषा का संबंध मुख्यत: समाज के अभिजात्य वर्ग से होता है जबकि राष्ट्रभाषा का साधारण वर्ग से इस प्रकार राज्यभाषा सत्ता की भी द्योतक होती है।

कहना न होगा कि भाषाविज्ञान के अंतरों में वस्तुनिष्ठता ला पाना एक कृत्रिम कार्य ही है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) 'अवधी' बोली

'अवधी' लखनऊ, जौनपुर, सीतापुर के आसपास के क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली है जो 'पूर्वी हिन्दी' उपभाषा वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। 'अवधी' के प्रयोग क्षेत्र को 'कोसल' का क्षेत्र भी कहा जाता है और अवधी को 'कोसली' या बैसवाड़ी के नाम से भी जाना जाता है।

ध्वनिगत विशेषताएँ

1. 'ऐ' और 'औ' का प्रयोग संध्यक्षरों के रूप में होता है यथा- भइल, चउड़ा

2. अवधी एक 'उकारबहुला' बोली है यथा- रामु कहतु चल भाई रे।

3. 'ण' के स्थान पर 'न', 'व' के स्थान पर 'ब' 'श' के स्थान पर 'स' तथा 'ष' के स्थान पर 'ख' का प्रयोग देखने को मिलता है।
यथा वन → बन
शब्द → सबद
प्राण → प्रान इत्यादि

व्याकरणगत विशेषताएँ

1. संज्ञा के तीन रूप देखने को मिलते हैं.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यथा - लरिका, लरिकता, लरिकउना

2. एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए पुल्लिंग में 'अन' प्रत्यय व स्त्रीलिंग में 'अन्ह', 'न्ह' आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है।
उदाहरणार्थ - बेटा - बेटन
बिटिया - बिटियन्ह

3. ~~आकारान्त~~ कुछ ~~पुल्लिंग~~ विशेषण अविकारी होते हैं यथा - छोट लरिका, छोट बिटिया

शब्दगत विशेषताएँ

मध्यकालीन अवधी में जहाँ जायसी आदि के काव्य में ठेठ अवधी शब्दों यथा 'दंगरा' का शब्दबाहुल्य है वहीं तुलसीदास ने संस्कृत शब्दों का अवधीकरण किया है यथा -
हंसगामिनी - हंसगविनि

अवधी बोली में ही अब तक का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य 'रामचरितमानस' रचा गया। ~~था~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) भाषा और बोली में अंतर

ऐसे तो भाषा और बोली के अंतर वैज्ञानिक न होकर समाजभाषावैज्ञानिक (Socio-linguistic) होते हैं ~~व्यवहारिक~~। इनके बीच कोई वस्तुनिष्ठ अंतर कर पाना संभव नहीं क्योंकि बोली ही परिष्करण की प्रक्रिया में आगे बढ़कर भाषा का स्वरूप ग्रहण करती है। फिर भी अध्ययन की दृष्टि से कुछ अन्तर देखे जा सकते हैं।

1. भाषा का एक निश्चित व्याकरण होता है और यह अपने प्रयोग क्षेत्र के बाहर भी मानक रूप में मिलती है जबकि बोली का स्वरूप अपने क्षेत्र में ही बदल जाता है।

2. = भाषा में का प्रयोग राजनैतिक आधिकारिक संदर्भों में होने लगता है परन्तु बोली का नहीं।

3. = भाषा का प्रयोगक्षेत्र विस्तृत होता है जबकि बोली का सीमित।

4. = भाषा में साहित्य की उपस्थिति व्यापक होती है, ~~भाषा~~ इसका प्रयोग पठन-पाठन आदि में होने लगता है,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जबकि बोली का प्रयोग आमजनजीवन के प्रयोगों, संस्कृति तक सीमित रह जाता है

5. बाहर के देश का कोई भी व्यक्ति भाषा को सीखने में सहजता महसूस करता है बोली में नहीं
6. भाषा की निश्चित लिपि होती है, बोली की नहीं परन्तु यह सब अन्तर भी एक सीमा तक ही वस्तुनिष्ठ सिद्ध होते हैं उदाहरणार्थ मध्यकाल में 'ब्रजभाषा' भाषा थी जबकि 'खड़ीबोली' बोली और आधुनिक काल में खड़ीबोली को भाषा का दर्जा प्राप्त हो गया और ब्रजभाषा बोली के स्तर पर सिमट गई

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकाल का समय हिन्दी साहित्य के दो युगों को सम्मिलित करता है.- भक्तिकाल तथा रीतिकाल।

~~भक्ति~~ ऐसे तो ब्रजभाषा के आरंभिक स्वरूप के दर्शन अमीर खुसरो के यहाँ देखने को मिल जाते हैं भले कि आरंभिक होकर भी परिनिष्ठा का अहसास कराते हैं परन्तु ब्रजभाषा प्रयोग में क्रांति का स्तर 'सूरदास' के आगमन के बाद ही हुआ।

आचार्य शुक्ल के अनुसार "सूर ने एक चलती हुई भाषा को साहित्यिक उत्कृष्टता के स्तर तक पहुँचा दिया।

सूरदास की ब्रजभाषा मुख्यत: शृंगार क्षेत्र के प्रत्येक अंग के लिए रूढ़ सी होने लगी। चाहे वह वात्सल्य हो, ~~संयोग~~ दाम्पत्य हो या अस्त्य शृंगार हो। इन अंगों के भी संयोग और वियोग दोनों पक्षों पर सूर का समान अधिकार था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

उदाहरणार्थ -

वात्सल्य - "मैया कबहिं बढ़ेगी चोटी,
किती बार मोहि दूध पियत भई
यह अबहूँ है छोटी"

सख्य - "खेलन में को काको गुसैंया"

सूर ने ब्रजभाषा की लोचशीलता में वृद्धि करते हुए जहाँ 'लीने', 'कीने' जैसे पूर्वी प्रयोग किए वहीं 'मँहगी' (प्यारी) जैसे पंजाबी- प्रयोग भी।

ब्रजभाषा के विस्तार के नये आयाम रीतिकाल में गठित हुए जब यह काव्यभाषा के स्तर से उठकर 'एकमात्र काव्य भाषा' बन गई क्योंकि शृंगार, देह उत्सव जैसी प्रवृत्तियों को मुक्तक में संप्रेषित कर पाना ब्रजभाषा जैसी तेज एवं चांचल्ययुक्त भाषा में ही संभव था। प्रयोगक्षेत्र के इसी विस्तार पर भिखारीदास लिखते हैं—

"ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानो
ऐसे-ऐसे कबिन की बानी ह्वै सो जानिये"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बिहारी के हाथों में पड़कर ब्रजभाषा में एक-एक शब्द सजगता से गढ़ा जाने लगा, समासिकता में अद्भुत अभिवृद्धि देखने को मिली और ब्रजभाषा की शुद्धता चमत्कारप्रियता का वहन करने लगी। यथा-

"कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत है, नैनन ही सौं बात"

रीतिकाल में संयोग शृंगार ही नहीं वियोग एवं भक्ति का संप्रेषण भी ब्रजभाषा में हुआ और घनानन्द जैसे कवियों ने इसे दैहिक स्थूल शृंगार से ऊपर उठाकर गहन संवेदना की अभिव्यक्ति का भी माध्यम बना दिया -

"उजरनि बसी है हमारी अँखियन देखो"

मीराबाई, रहीम आदि के यहाँ भक्ति की परंपरा भी अनवरत कायम रही। जहाँ मीराबाई के यहाँ ब्रज का राजस्थानी मिश्रित रूप देखने को मिलता है वहीं केशव के यहाँ बुंदेली मिश्रित।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहना न होगा कि मध्यकाल में ब्रज ने जिस उच्च स्तर को छुआ वह अन्य बोलियों के लिए अभी भी प्रतिमान ही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) सर्वनाम का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए सर्वनाम के विभिन्न भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

सर्वनाम का अर्थ है जो सबका नाम हो। अर्थात् संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले पदों को सर्वनाम कहा जाता है।

सर्वनाम के भेद

1. पुरुषवाचक सर्वनाम : जो सर्वनाम श्रोता, वक्ता व विषय के सम्बन्ध में प्रयुक्त हो वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहे जाते हैं।

उदाहरणार्थ : उत्तम पुरुष - मैं, हम
मध्यम पुरुष - तू, तुम
अन्य पुरुष - वे, उनका

प्रयोग : मैं घर जा रहा हूँ।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम : जो सर्वनाम किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, स्थान का आभास कराएँ।

यथा - वह पुस्तक थी में 'वह' निश्चयवाचक सर्वनाम है।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम : किसी अनिश्चित व्यक्ति, वस्तु, स्थान का भाव उत्पन्न

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करते हैं।
यथा- 'कोई' किताब देना में कोई अनिश्चयवाचक सर्वनाम है।

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम में संज्ञा के स्थान पर प्रश्न का भाव आता है यथा- वह किसकी किताब है में 'किसकी' सर्वनाम किताब के मालिक के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है।

5. संबंधवाचक सर्वनाम- यथा- जो कल माँगी थी वह किताब देना में सर्वनाम किसी वाक्य के दो अंशो में संबंध का वहन करता है।

6. निजवाचक सर्वनाम किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के अपनेपन का अहसास कराते हैं यथा- वह मेरा अपना घर है में 'अपना' सर्वनाम

हिन्दी की सर्वनाम व्यवस्था बहुत हद तक वस्तुनिष्ठ हो गई है और वैज्ञानिकता व मानकता के आयामों को संतुष्ट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश का अर्थ है भ्रष्ट भाषा। यह पालि, प्राकृत से होते हुए 5वीं से 11वीं शताब्दी में प्रयुक्त होने वाला स्वरूप है।

व्याकरणिक विशेषताएँ

1. संज्ञा व कारक व्यवस्था

(क) परसर्गों संज्ञा के निर्विभक्तिक प्रयोगों का तो प्रचलन बढ़ा ही साथ में विभक्तियों का स्थान परसर्ग लेने लगे

उदाहरणार्थ - राम रावण मारा।

(ख) एक ही विभक्ति से कई कारकों का काम चलने लगा यथा - 'युवराजन्हि मॉंहि सॉंझ केरो फुल्ल'

(ग) व्यंजनान्त शब्द स्वरान्त होने लगे तथा अगले स्तर पर सभी स्वरान्त शब्दों में विभक्ति प्रयोग अकारान्त की तरह होने लगा जिससे संज्ञा के रूप जो संस्कृत में लगभग 72 थे यहाँ कम हो गए।

यथा - (1) कर्ता, कर्म, संबंध के लिए एक विभक्ति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) करण, अधिकरण के लिए समान व अपादान, सम्प्रदान व सम्बोधन के लिए एक रूप

2. वचन व्यवस्था

संस्कृत के 'द्विवचन' की व्यवस्था समाप्त हो गई और वे सभी पद बहुवचन में सम्मिलित कर लिए गए। अब 'बहुवचन' व 'एक-वचन' का प्रयोग रूढ़ हो गया।

3. लिंग-व्यवस्था

नागर अपभ्रंश में कहीं-कहीं नपुंसक लिंग का प्रयोग जरूर दिखता है पर मुख्यतः दो ही लिंगों का प्रयोग होने लगा तथा प्रचलन के आधार पर ~~प्रकृतिक~~ शब्दों के लिंग तय होने लगे।

4. विशेषण व्यवस्था

संख्यावाचक विशेषणों का प्रयोग इस युग की विशिष्ट उपलब्धि है जो आगे खड़ी बोली को भी प्रभावित करती है यथा - नौ, ग्यारह इत्यादि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. सर्वनाम व्यवस्था : मैं, हौं, मेरा, हूँ आदि सर्वनामों का प्रचलन दिखता है।

6. क्रिया व्यवस्था में कृदंतों का विकास तथा संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग इस युग की महती उपलब्धि है।
यथा - रटन्तऊँ भाई (संयुक्त क्रिया)
संस्कृत की तिर्यंत परंपरा खत्म होने लगी
अपभ्रंश के व्याकरण का सीधा प्रभाव आधुनिक भाषा में दर्शित होता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) राजस्थानी हिंदी और उसकी बोलियों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजस्थानी हिन्दी हिन्दी का वह उपभाषा वर्ग है जो राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र तक विस्तृत है।

राजस्थानी हिन्दी की प्रमुख बोलियों में मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती प्रमुख है।

मारवाड़ी

मारवाड़ी इस उपभाषा वर्ग की सबसे सशक्त बोली है इसका कारण मारवाड़ी समाज की समृद्धि व ~~भौगि~~ भौगोलिक विस्तार का क्षेत्र है।

(i) मारवाड़ी में 'ओकारान्तता' की प्रवृत्ति मुख्यतः मिलती है यथा- म्हारौ, थारौ।

(ii) न के स्थान पर 'ण' का प्रयोग होता है यथा - मणो, जाणा इत्यादि

(iii) पुल्लिंग एकवचन ओकारान्त होते हैं यथा हुक्को, तारो जबकि स्त्रीलिंग ~~एक~~ बहुवचन आकारान्त यथा रातॉं, बातॉं

(iv) कुछ-कुछ प्रयोग हरियाणवी से भी मिलते हैं।

(v) ~~('है') के स्थान~~ सहायक क्रिया के 'ह'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रूप के स्थान पर 'स' रूप देखने को मिलता है।

भाषाक्षेत्र: मुख्यतः जोधपुर के आसपास का मारवाड़ क्षेत्र

जयपुरी / ढूंढाणी

यह बोली जयपुर के आसपास बोली जाती है।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. 'ण' के स्थान पर 'न' का प्रयोग किया जाता है यथा- मनै, तनै इत्यादि।

2. अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति देखने को मिलती है यथा- भूक, हाथ इत्यादि

3. मालवी

यह बोली कोटा, चित्तौड़ के क्षेत्रों के साथ-साथ मध्यप्रदेश के इन्दौर, रतलाम, नीमच आदि जिलों में भी बोली जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. 'ऐ' के स्थान पर 'ए' का उच्चारण तथा 'औ' के स्थान पर 'ओ' जैसा उच्चारण दिखता है
कौन → कोन
इन्दौर – इन्दोर
कैसा → केसा

2. आदि अक्षर के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति दिखती है
लड़की → लाड़की
कपड़ा → कापड़ा

3. अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति सर्वव्याप्त है
यथा– मुजको, ~~तुझ~~ तुजको इत्यादि

4. सर्वनामों में ~~[illegible]~~ कौनै, काएको इत्यादि प्रयुक्त होते हैं।

मेवाती
यह बोली ~~अजमेर~~ अलवर के साथ हरियाणा के गुड़गाँव के आसपास भी बोली जाती है जिसमें महाप्राणीकरण, आकारान्तता तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

('ट' वर्ग के प्रयोग की प्रधानता दिखती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिंदी की वाक्य-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तात्पर्य से अर्थ उस इकाई से है जो अपने आप में 'अर्थबोधन' करने में सक्षम हो।

वाक्य रचना के लिए तीन आवश्यकताएँ पूर्ण करना आवश्यक है।

(I) आकांक्षा: वाक्य संरचना में शब्द एक-दूसरे के बिना अर्थबोधन नहीं कर सकते यथा राम घर जाता है में 3 चारों शब्द एक-दूसरे की आकांक्षा रखते हैं।

(II) योग्यता: वाक्य से उत्पन्न अर्थ व्यवहारिक दृष्टि से बाधित नहीं होना चाहिए।
यथा- "पानी से कपड़ा सुखा यो" व्याकरण सम्मत होते हुए भी निरर्थक वाक्य है।

(III) सन्निधि: वाक्य के विभिन्न अंश भौगोलिक व कालिक दृष्टि से निकट होने चाहिए। अगर किसी वाक्य के अंश अलग-अलग पृष्ठों पर लिखे हों या अलग-अलग दिन बोले जाएँ तो कोई अर्थ नहीं निकलता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(i) मानक
हिन्दी में वाक्य रचना हेतु SOV अर्थात कर्ता-कर्म-क्रिया की संरचना स्वीकृत है और अन्य कारक उपयोगानुसार निश्चित क्रम में आते हैं। जो इस प्रकार है।
संबोधन - कर्ता - अधिकरण - संबंध - अपादान - सम्प्रदान - करण - कर्म - ।

(ii) कोई भी सरल वाक्य तभी अर्थ-संप्रेषित कर सकता है जब उसमें क्रिया का प्रयोग हो अन्यथा वह किसी अन्य वाक्य पर आश्रित होगा ही
यथा - प्र. कहाँ जा रहे हो -
उ. - मथुरा ।
यहाँ 'मथुरा' प्रथम वाक्य पर आश्रित वाक्य है।

वाक्य रचना का भेद सरल, मिश्र, व संयुक्त वाक्य में भी किया जाता है। जहाँ सरल वाक्य एक वाक्य अपने आप में पूर्ण अर्थ व्यक्त करता है वहीं संयुक्त वाक्य में दो वाक्यों के बीच समानाधिकरण जबकि मिश्र वाक्य में व्याधिकरण संबंध होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

उदाहरणार्थ

मिश्र वाक्य : ~~मैं चलता जा रहा था~~

"राम ने बताया कि पानी गिर रहा है"

संयुक्त वाक्य

"मैं चलता जा रहा था और धूल उड़ती जा रही थी"

अतः

मानक हिन्दी में वाक्य रचना व्यवस्थित व वैज्ञानिक रूप प्राप्त कर चुकी है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कुमाऊँनी' बोली का संक्षिप्त परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुमाऊँनी बोली पहाड़ी हिन्दी उपभाषा वर्ग की वह बोली है जो कुमाऊँ क्षेत्र अर्थात देहरादून, मसूरी के आस-पास बोली जाती है।

पहाड़ी हिन्दी की बोलियों में चीनी, खस जाति की अनार्य बोलियों का प्रभाव दिखता है और कुमाऊँनी भी अछूती नहीं है यथा - ड़, ण का स्वतन्त्र प्रयोग अनुस्वार प्रयोगों की अधिकता इत्यादि

परन्तु विकास के क्रम में ब्रज और राजस्थानी के प्रभाव ने प्राथमिकता हासिल की और अनार्य प्रभावों को कम कर दिया। उदाहरणार्थ - आकारान्तता व ओकारान्तता की प्रवृत्ति तथा 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग।

कुमाऊँनी में एकवचन पुल्लिंग के लिए 'अन' प्रत्यय का प्रयोग होता है और बहुवचन बनाने के लिए 'ऊँ' प्रत्यय यथा → घोड़ा → घोड़ूँ इत्यादि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

शब्दशास्त्र में पश्चिमी व राजस्थानी प्रभाव स्पष्ट देखे जा सकते हैं तथा देशज शब्दों की प्रधानता मिलती है।

मानकता के क्रम में कुमाऊँनी पर भी वही असर हुआ जो अन्य बोलियों पर और खड़ी बोली का मिश्रण दिखने लगा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) दिनकर की कृति उर्वशी का प्रतिपाद्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रकवि 'रामधारी सिंह दिनकर' की प्रसिद्धि ओजगुण प्रधान, प्रगतिवादी कवि रूप के रूप में है। परन्तु वे अपने मानवतावादी दर्शन को 'सहज शृंगार' तक ले जाते हैं और व्यक्ति के मन में उठने वाले सहज प्रेम, आकर्षण के भावों को भी महिमामंडित करते हैं।

दिनकर की कृति 'उर्वशी' का स्थान ऐसे ही भावों के कारण विशिष्ट है। दिनकर पुरुरवा व उर्वशी के मन के सहज कामसंबंधी विचारों को प्रस्तुत कर वायवीय प्रेम के स्थान पर पार्थिव व 'अशरीरी' के स्थान पर 'शरीरी' प्रेम का महत्व स्थापित करते हैं और इसे प्रकृति का सहज नियम मानकर स्वीकार करते हैं।

वे छायावाद की उस प्रेमदृष्टि को खारिज करते हैं जहाँ प्रेम शरीर की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं बल्कि 'आत्मा' की वस्तु बन जाता है और मनुष्य को इहलौकिक प्रेम की ओर अग्रसर करते हैं।

यहाँ 'उर्वशी' सहज नारी और पुरुरवा सहज पुरुष हैं।

कहना न होगा कि 'उर्वशी' के माध्यम से दिनकर सहज काम को स्थापित कर प्रेम के का साधारणीकरण करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भूमंडलीकरण से तात्पर्य उस व्यवस्था से है जहाँ सारा विश्व आपस में जुड़कर एक गाँव का आभास कराता है और आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक विचारों का संचार द्रुत गति से होता है।

हिन्दी उपन्यास में भी भूमंडलीकरण के अच्छे - बुरे समस्त रूपों को विषयवस्तु बनाया गया है जो मुख्यतः 80 अस्सी व 90 के दशक में सघनता से मिलता है।

काशीनाथ सिंह जहाँ 'रेहन पर रग्घू' के माध्यम से एक पुरानी पीढ़ी के व्यक्ति पर भूमंडलीकरण के प्रभाव को चित्रित करते हैं वहीं 'काशी का अस्सी' में वे अस्सी के दशक में आये बदलावों को काशी की पृष्ठभूमि में बताते हैं और उसका पुरानी पीढ़ी से भी संदर्भ जोड़ते हैं।

इसी प्रकार भूमंडलीकरण के बाद उत्पन्न गलाकाट प्रतिस्पर्धा का चित्रण मु. आरिफ के उपन्यास 'प्रतियोगी' तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नीलाक्षी सिंह के उपन्यास 'पापा का चेहरा' में देखने को मिलता है।

मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास 'हरिया हरक्युलिस की कहानी' में 'ग्लोबल विलेज' की अवधारणा का समग्रता से मूल्यांकन दिखता है।

आज के दौर के लेखक भी भूमंडलीकरण को अपने रचनाकर्म में लगातार स्थान दे रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी गद्य के विकास में बालकृष्ण भट्ट का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु मंडल के वरिष्ठतम सदस्य थे जिनका रचनाकर्म निबंध, आलोचना, पत्रकारिता, उपन्यास आदि क्षेत्रों में विस्तृत था और भारतेन्दु युग में जो गद्य की परंपरा का प्रणयन हुआ वे इसके प्रमुख सूत्रधार थे।

बालकृष्ण भट्ट गद्य में भाषायी शुद्धता के समर्थक होकर भी विभिन्न भावों के शब्दों को अपनाने पर बल देते थे और ऐसा प्रयास वे अपने पत्र 'हिन्दी प्रदीप' में करते हैं।

निबंधों में वे 'स्टील' की परंपरा में विचार प्रधान निबंधों का सूत्रपात करते हैं हालांकि अन्य विषयों पर भी वे समान पकड़ रखते थे उदाहरणार्थ - 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' में वे उसी अवधारणा की बात करते हैं जो आगे शुक्ल जी 'भक्ति की चित्तवृत्तियों' के माध्यम से।

वे 'कलिराज की सभा', 'चंद्रसेन', 'रेल का टिकट' जैसे नाटक भी लिखते हैं और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कवि प्रदीप में 'सच्ची समालोचना' स्तम्भ के माध्यम से 'संयोगिता स्वयंवर' का मूल्यांकन कर आलोचना का आधुनिक संदर्भों में सूत्रपात भी करते हैं।

बालकृष्ण भट्ट ने कुछ उपन्यास भी लिखे हालांकि उनका महत्व ज्यादा नहीं है।

इस प्रकार भट्ट जी गद्य की सभी विधाओं में सशक्त शुरुआत के श्रेय के लिए हिन्दी साहित्य में सदैव स्मरण किए जायेंगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) रामचंद्रिका की संवाद-योजना

केशवदास का रचनाकर्म मुख्यतः संवाद-योजना के लिए जाना जाता है जिसकी प्रशंसा आचार्य शुक्ल से लेकर अज्ञेय तक की परंपरा के आलोचकों ने की है।

संवाद योजना की दृष्टि से उनका 'रामचंद्रिका' प्रबंध काव्य सर्वोत्कृष्ट है। उनके लक्ष्मण-परशुराम संवाद, रावण-अंगद संवाद आदि रामचरितमानस से भी उत्कृष्ट बन पड़े हैं।

वे भरत-कैकेयी संवाद में एक ही पंक्ति में राम वनगमन, दशरथ मृत्यु तथा मृत्यु के कारण को समेटकर सारगर्भिता तथा कसाव का परिचय देते हैं यथा-

मातु कहाँ नृपतात, गए सुरलोकहिं, क्यों?,
सुत शोक लए"

इसी प्रकार उनके रावण-अंगद संवाद की व्यंग्यात्मकता दर्शनीय है

"राम को काम कहाँ, रिपु जीतहिं,
कौन कबै रिपु जीत्यो कहाँ"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उनके लक्ष्मण - परशुराम संवादों में ओजगुण ~~सं~~ अन्य काव्यों से अधिक है।

इन्हीं बातों के कारण आचार्य शुक्ल घोषणा करते हैं कि "केशव को सर्वाधिक सफलता मिली, उनके संवादों में। उनके जैसी चुस्त संवाद ~~संय~~ योजना अन्यत्र उपलब्ध नहीं"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कहानी का रंगमंच

ऐसे तो कहानी को मुख्यतः पाठ्य व श्रव्य विधा माना जाता है और नाटक को दृश्यविधा परन्तु आधुनिक युग में विधाओं के मध्य अंतर अति संकुचित हो गए हैं और एक विधा का दूसरी विधा में परिवर्तन किया जाने लगा है।
ऐसे

हिन्दी में कुछ कहानियों के सशक्त नाटकीय प्रभावों के कारण उनमें प्रयुक्त संवाद, चुस्त संवाद योजना व चरित्र योजना के कारण कहानियाँ भी रंगमंच पर नाटक के रूप में आने लगी हैं और इसकी अगली स्थिति में कहानियाँ फिल्मों की स्क्रिप्ट के रूप में ली जाने लगी हैं। यथा - 'रजनीगंधा' फिल्म में 'यही सच है' को आधार बनाया गया है, वहीं 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' का नाट्य रूपान्तरण तो हुआ ही, फिल्म के रूप में भी रूपान्तरण हुआ।
इस प्रकार आधुनिक कहानियाँ भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रंगमंच के प्राण के रूप में उमराव अपने अनुसार रंगमंच की मांग कर रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'पृथ्वीराजरासो' को 'ट्रैजिडी' मानना कहाँ तक उचित है? तर्कसम्मत उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावादी कविता जिन विशिष्ट कारणों से साहित्य में सम्मानित है उनमें इसकी 'सौन्दर्य चेतना' का स्थान सर्वोच्च है।

रीतिकालीन स्थूल दैहिक, सौन्दर्य का स्पष्ट परित्याग तो यहाँ मिलता ही है, द्विवेदी युग में नारी व प्रकृति को जो सम्मान मिलना शुरू हुआ उसे भावना के स्तर तक छायावादी कविता ने ही पहुँचाया।

छायावादी कवि समस्त जगत, प्रकृति को ईश्वर की अभिव्यक्ति मानकर सुन्दर तो मानता ही है परन्तु मानव की सुन्दरता को सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है।

"सुंदर है सुमन, विहग सुन्दर, मानव तुम सबसे सुंदरतम"

यहाँ नारी पत्नी के स्थान से भी ऊपर सहचरी, प्राण व प्रिया के स्तर तक पहुँच गई है। छायावादी कवि प्रेम को आत्मा की वस्तु बना देते हैं और निर्मलता, पवित्रता को मंडित करते हैं →

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" तुम्हारे छूने में था प्राण
साथ में पावन गंगा स्नान "

जहाँ द्विवेदीयुगीन कविता प्रकृति को काव्य का हिस्सा बनाती है वहीं छायावादी कवि प्रकृति का मानवीकरण करते हुए ~~उसमें~~ उसे अपने समकक्ष मानता है –

" मेघमय आसमान से उतर रही है
संध्या सुन्दरी परी सी
धीरे - धीरे - धीरे । "

मानवीकरण से भी एक स्तर ऊपर जाकर छायावादी कवि प्रकृति को मानवीय शृंगार से ~~ऊपर~~ उच्च स्थान पर आभूषित करता है और प्रकृति को सौन्दर्य चेतना में सर्वोच्च प्राथमिकता देता है –

" छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल में
कैसे उलझा दूँ लोचन " ।

छायावादी सौन्दर्य चेतना सिर्फ ~~[illegible]~~ प्रकृति और अभिजात्य वर्ग तक ही सीमित

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं रहती। अपने अंतिम दौर में छायावादी कवि ~~सम्पू~~ समाज के निम्नवर्ग चाहे वह 'भिक्षुक' हो या इलाहाबाद के ~~पथ~~ पथ पर 'वह तोड़ती पत्थर' हो; सबको अपनी कविता में स्थान देते हैं। वे ग्रामीण सौन्दर्य को भी देखना चाहते हैं और शहरी सौन्दर्य को भी।

कहना न होगा कि सौन्दर्य चेतना का जितना विस्तार छायावाद में मिलता है वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आँचलिक उपन्यासधारा से तात्पर्य उस धारा से है जो किसी विचारधारा के बंधन से मुक्त हो किसी अंचल विशेष को उपन्यास का विषय बनाती है और उस चंचल का समग्रता में ऐसा चित्रण - विश्लेषण करती है कि अंचल पाठक की चेतना का हिस्सा बनकर उभरता है।

यूरोप में जहाँ 'फॉकनर' व मारिया एडवर्ड' जैसे लेखकों ने इस उपन्यासधारा को शुरू किया तो हिन्दी में इस उपन्यासधारा को प्रारंभ करने और उत्कृष्टता तक पहुँचाने का श्रेय 'फणीश्वर नाथ रेणु' को 'मैला आँचल' उपन्यास के कारण दिया जाता है।

रेणु स्पष्ट करते हैं - "इसमें फूल भी है, शूल भी है, धूल भी, गुलाब भी है, कीचड़ भी है। मैं किसी से अपना दामन बचाकर नहीं निकल पाया" जो एक तरह से आंचलिक उपन्यासधारा का घोषणा पत्र ही है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आँचलिक उपन्यासों में भौगोलिक, सांस्कृतिक वर्णनों को सघनता से चित्रित किया जाता है और अंचल विशेष की सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों पर चर्चा की जाती है।

भाषा में देशज शब्दों की बहुव्याप्ति होती है जो एक प्रकार से इस उपन्यास को अँचल से बाहर के पाठक वर्ग के लिए सीमित भी कर देती है।

रेणु के मैला आँचल के बाद भी आँचलिक उपन्यास लिखे गए यथा –

रांगेय राघव – कब तक पुकारूँ
नागार्जुन – बलचनमा
रेणु – परती परिकथा

और मैला आँचल के पहले भी 'देहाती दुनिया' जैसे उपन्यासों में आँचलिकता के तत्व सीमित मात्रा में दिखते हैं किन्तु अनवरत धारा को प्राण देने का काम 'मैला आँचल' ने ही किया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मौलिकता की दृष्टि से केशवदास के काव्यकर्म का परीक्षण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

केशवदास को रीतिकाव्य परंपरा का प्रणेता माना जाता है और रीतिकाव्य अपने आप में जिस लक्षणग्रंथ परंपरा पर आधारित है उनकी प्रसिद्धि मौलिकता के लिए नहीं बल्कि 'अनुकरण' को लेकर है परन्तु फिर भी आलोचकों ने केशव के काव्यकर्म में कई स्थानों पर मौलिकता को चिह्नित किया है।

भले ही रीतिकाव्य अनुकरणवादी हो पर संस्कृत में उपलब्ध ज्ञान को ब्रजभाषा में उपलब्ध कराना अपने आप में एक मौलिक विचार ही था।

पुनः केशव ने अलंकार विश्लेषण में 'सामान्य' और 'विशिष्ट' में वर्गीकरण तो किया। साथ ही श्रृंगार का विवेचन भी मौलिक दृष्टि से किया।

अपने प्रबंध काव्य 'रामचन्द्रिका' में वे राम के राजसी पक्ष को प्रस्तुत करते हैं जो अन्य कवियों की दृष्टि से अछूता रह गया था और सेना गमन, सिंहासन आदि का विस्तृत विवेचन करते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुनः उन्होंने संवाद योजना में जिस कसाव की प्राप्ति की वह उस समय तक तो अनुपलब्ध थी ही अभी तक भी बहुत कम कवि उस स्तर को छू पाए हैं। उनके लक्ष्मण - परशुराम संवाद ~~राम~~ मानस से भी ओजपूर्ण हैं। तथा रावण - अंगद संवाद व्यंग्य के प्रतिमान हैं।

उन्होंने 'विज्ञानगीता' में दर्शन की मौलिकताओं का उद्घाटन किया और जहाँगीर जसचंद्रिका में इतिहास लेखन की

अतः केशव का एक पक्ष मौलिकता निश्चित तौर पर है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation